त्रिवेणी धाम की सन्त परम्पराएँ

त्रिवेणीधाम की स्थापना श्री गंगादास जी महाराज के कर- कमलों द्वारा लगभग दौ सो वर्ष पूर्व की गयी थी। आपका जन्म, अथौरा गाँव (अजीतगढ़) के ठाकुर एवं जयपुर रियासत के सैन्यविभाग के सेवानिवृत्त अधिकारी श्री मनोहर सिंह जी के घर में, सन्त-समाज (जमात) के प्रमुख के आशीर्वाद एवं वरदान से हुआ था। किशोरावस्था में ही आपकी सगाई होने वाली थी, किन्तु उसकी पूर्वसन्ध्या को ही आपकी आत्मा ने विद्रोह कर दिया, अतः आपने रात्रि को गृहत्याग कर वैराग्य के मार्ग को अपना लिया। संयोगवश पुष्कर में आपको खोजीद्वाराचार्य श्री भरतदास जी के दर्शन हुए। उन्हीं के साथ आप अयोध्या पहुँचे।

श्री गंगादास जी महाराज अयोध्या में काठिया आश्रम के पूज्य सन्त श्री भरतदास जी के सानिध्य में रहकर साधना करने लगे। गुरुदेव ने आपकी सेवा से सन्तुष्ट होकर, दीक्षा प्रदान की। कदाचित् आपके जन्म स्थान के समीप स्थल धाराजी आश्रम पर अयोध्या से आए एक सन्त द्वारा पता बताए जाने पर अनुमान से आपके पिताश्री अयोध्या पहुँच गए और पूज्य गुरुदेव भरतदास जी से अनुनय-विनय करते हुए, अपनी इकलौती संतान को अपने क्षेत्रस्थल पर भिजवाने का अनुरोध किया। पूज्य गुरुदेव की आज्ञा से आपने अपने क्षेत्र में लौट कर राम-नाम प्रचार का दायित्व संभाल लिया।

स्वामी श्री गंगादासजी का तपश्चरण

पूज्य स्वामी जी ने कई प्राकृतिक स्थानों पर साधनाएँ कीं किन्तु सबसे बड़ी तपस्या आपने श्रीजगदीशजी के स्थान पर की, जहाँ आपको अनेक प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सन्तों के दर्शन हुए, आशीर्वाद मिला और वहाँ से चलकर स्वामी जी ने वर्तमान धाम-स्थल से उत्तर में साइवाड़ के पास अपना आसन जमाया, किन्तु गृहस्थियों द्वारा निरन्तर जमघट लगाए रहने के कारण आप वहाँ से चल कर, अपने वर्तमान स्थान पर आ गये तथा यहीं पर अस्थायी आश्रम की भी स्थापना की।

आप के आशीर्वाद से ही आपकी माता को दूसरे पुत्र की प्राप्ति हुई, जो उनकी अपने वंश बढ़ाए जाने की माँग पर वरदान स्वरूप संभव हुई थी। युवावस्था प्राप्त होने पर उसका विवाह भी कर दिया गया, किन्तु थोड़े दिनों के बाद स्वामीजी का अनुज निसंतान ही चल बसा। युवक की पत्नी ने स्वामी जी से विनय की और उनके माता-पिता को दिए

वचनानुसार वंशवृद्धि हेतु अपने पतिदेव को जीवित करने की याचना की। फलतः स्वामीजी ने अपने प्राणों का दान कर दिया। छोटा भाई जीवित हो गया और उसी समय स्वामी जी का साकेतवास हो गया।

स्वामी श्री जानकीदास जी महाराज

स्वामी श्री गंगादास जी महाराज के परलोक सिधारने के बाद उनके प्रिय शिष्य श्री जानकीदास जी त्रिवेणीधाम की गद्दी पर विराजे। आपका जन्म कुण्डला स्थित बलेश्वर में हुआ था। आप बचपन में ही पहाड़ों पर जाकर एकान्त स्थान पर चिन्तन मनन करते थे। आपने तत्कालीन अलवरनरेश के आग्रह पर उन्हें अपने ही घुटनों पर विराजित श्री राघवेन्द्र सरकार एवं जगज्जननी किशोरी जी के दर्शन करवाए और उसी स्थान पर भगवान का भव्य मन्दिर बनाने का आदेश दिया।

आपके अनेक चमत्कारों में से एक चमत्कार त्रिवेणी गंगा के जल को घी बनाकर उसमें मालपुए बनाने एवं पुनः घी के लौटाए जाने पर उसको त्रिवेणी जल में ही गिराने का दृष्टान्त अत्यन्त प्रचलित है। इसके अतिरिक्त वर्षा आने की भविष्यवाणी करना तो आपके लिए सामान्य बात थी। स्वामीजी के अद्भुत चमत्कारों से प्रभावित होकर आस-पास के लोगों ने उनसे दीक्षा ग्रहण की, फलतः शिष्यपरम्परा में आशातीत वृद्धि हुई। श्री जानकीदास जी महाराज के साकेतवास के बाद धाम की गद्दी पर श्रीरामदासजी महाराज विराजे, किन्तु अल्प आयु में ही चल बसने के कारण आपके बाद श्री भजनदास जी महाराज गद्दी पर आसीन हुए। आपके कार्यकाल में त्रिवेणी धाम में सन्त सेवा एवं गौसेवा प्रचुर रूप से होने लगी जिससे आश्रम की महिमा सर्वत्र प्रसृत हुई।

श्री भगवानदास जी महाराज का प्राकट्य

चार पीढ़ियों के बाद आश्रम की पाँचवी पीढ़ी में जिन सन्त भगवान् का पदार्पण हुआ वे "यथा नाम तथा गुण" के अनुरूप परम उदार, अनुशासनप्रिय एवं भगवान के परम भक्त थे। आपके कार्यकाल में भगवान् श्री नृसिंह की प्रतिमा के साथ ही श्री सीताराम जी की प्रतिमाएँ भी प्रतिष्ठापित की गयीं। मन्दिर का जीर्णोद्धार करवाया गया। तथा उसे भव्य स्वरूप प्रदान किया गया। निरन्तर सन्तसेवा होने लगी। अखण्ड नाम संकीर्तन तथा रामचरितमानस का अखण्ड परायण भी किया जाने लगा।

इससे त्रिवेणी धाम की शिष्यपरम्परा बढ़ने लगी। सन्तमण्डलियाँ आने लगीं और चारों ओर भजन होने लगे। आप भगवान के सच्चे भक्त होने के साथ ही परम दयालु सन्त थे। दुखियारे लोग आकर आपके समक्ष अपना दुःख दर्द सुनाने लगे। बड़े महाराज के बताए उपायों के द्वारा उनका उपचार होने लगा। एक बार फसल पर रोली नामक रोग लग

गया। किसान त्राहि-त्राहि करने लगे। बड़े महाराज श्री की शरण में आकर उन्होंने प्रार्थना की। महाराज श्री ने पूज्य गुरुदेव एवं भगवान् से उनका दुःखड़ा सुनाया और प्रेरणा पाकर आदेश दिया, कि श्री गंगादास जी महाराज के चरणों को धोकर उसका पानी लें। उसमें और पानी मिलाते जाइए और फसल पर छिड़किए। पूज्य गुरुदेव सब कुछ ठीक करेंगे। फसल का रोली रोग दूर हो गया और फसल पक कर कई गुना बढ़ गयी। किसान प्रसन्न हो गये। इसके बाद प्रतिवर्ष होली के अवसर पर धूलण्डी के दूसरे दिन मेला भरने लगा।

आपके बहुत से चमत्कारों में से यह भी प्रसिद्ध है, कि शाहपुरा के समीप ही एक गाँव में मृतक बच्चे को आपने जीवनदान दिया। भू- गर्भ में जल की स्थिति बतायी जाने लगी। खेतों में कुओं के निर्माण होने लगे। एक बार गंगा के तट पर आप द्वारा बनाए गए कुण्ड में एक ग्वाला भेड़ों को नहलाकर पानी गन्दा कर रहा था। बड़े महाराज श्री के मना करने पर उसने उपेक्षा वृत्ति दिखाते हुए कहा महाराज बस एक भेड़ ही और रह गयी है और उसे भी नहलाने लगा। बड़े महाराज ने कहा एक ही रह गई है। रात्रि को उसकी सभी भेड़ें मर गई केवल एक ही रह गयी। सुबह ग्वाला रोता हुआ आया, किन्तु दयालु होने के कारण महाराज श्री ने कहा- घर जा और रेवड़ को चराने ले जा। ग्वाले ने घर जाकर देखा सभी भेड़ें जीवित हो गयी थीं।

आपने साधु-समाज को संगठित करने का भी बीड़ा उठाया। फलतः बड़े-बड़े सन्तों का पदार्पण होने लगा। श्री कौशल्यादास जी महाराज एवं श्री किशनदास जी महाराज आपके अभिन्न अंग बन गए थे। वे दोनों कई दिनों तक यहाँ रहते तो कभी आप उनके यहाँ यज्ञशाला की बावडी एवं स्टेशन के पास बगीची में जाकर रहते। साधुसमाज में आपका बहुत बड़ा सम्मान था। साधुओं के प्रत्येक कार्यो में आपकी सलाह ली जाने लगी थी। फलतः आपकी शिष्यपरम्परा एवं आश्रम की महिमा में आशातीत वृद्धि हुई। जगह-जगह तीर्थस्थलों पर आपकी प्रेरणा से धर्मशालाएँ एवं मन्दिर बनवाए गए। आश्रम के पास पड़ी भूमि पर आप द्वारा खेती की जाने लगी, जिससे आश्रम की आर्थिक स्थिति में भी अच्छा सुधार हुआ। अन्नदान की दृष्टि से भी धाम स्वावलम्बी बन गया।

शिष्यपरम्परा अन्य प्रदेशों में रहने वाले राजस्थान के प्रवासियों तक भी बढ़ने लगी थी, अतः आपकी दूर-दूर यात्राएँ होने लगीं। जहाँ भी आप पधारते, बड़ी संख्या में शिष्य आपका स्वागत सत्कार करते। आप लगभग नब्बे वर्ष तक आश्रम की सेवा करते रहे और मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा १९२७ विक्रम संवत् २०२८ को साकेतवासी हो गए।

त्रिवेणीधाम का स्वर्णयुग (छठी पीढ़ी)

पूज्यपाद बड़े महाराज के साकेतवास के बाद त्रिवेणीधाम की गद्दी पर महाराजश्री के परम शिष्य वर्तमान

महाराजश्री श्री १००८ श्री नारायणदासजी महाराज आरूढ़ हुए। आपका जन्म त्रिवेणी धाम से ४ कि.मी. दूर चिमनपुरा ग्राम में महर्षि कुल में श्री रामदयालु जी की धर्मपत्नी, धर्मपरायणा श्रीमती भूरी देवी की कोख से आश्विन कृष्ण सप्तमी विक्रम संवत् १९८४ में हुआ। आपकी मंदिर में शरणागति से पूर्व ही लगभग आपका संपूर्ण परिवार बड़े महाराज श्री की शिष्यपरम्परा ग्रहण कर चुका था। आपकी शिक्षा आस-पास के पंडितों के निर्देशन में ही हुई। किशोरावस्था में ही आपको असाध्य रोग से ग्रस्त देखकर आपकी माता ने अनहोनी की आशंका से आपको त्रिवेणीधाम के महाराज श्री के चरणों में समर्पित कर दिया। बड़े महाराज श्री ने आपका उपचार करवाया, आशीर्वाद दिया, इसके बाद महाराज श्री अपने गुरुदेव को अपना प्राणदाता मानने लगे। आपने अनूठी आस्था एवं सच्ची श्रद्धा के साथ बड़े महाराज की सेवा की।

पूज्य बड़े महाराज के आदेशानुसार आपने पंचाग्निसाधना, शीतसाधना एवं जलसाधना की। अपने शरीर को हर तरह से तपाकर तपस्या से निर्मल बना लिया। आज आप गर्मी, सर्दी, वर्षा में मात्र एक वस्त्र में ही रह कर अपनी दिनचर्या चलाते हैं। प्रातः ३ बजे से लेकर रात्रि दस बजे तक निरन्तर सन्तसेवा तथा गौ-सेवा करते हुए प्राणी मात्र का दुःख दूर करने का प्रयास करते रहते हैं। आपका यह कालखण्ड आश्रम के सर्वांगीण विकास का इतिहास है। आश्रम के बड़े-बड़े भवन आपकी प्रेरणा एवं योजना के ही परिणाम हैं। अष्टोत्तरशतकुण्डीय यज्ञशाला एवं मानसमंदिर आज भी विश्व में अपना अद्वितीय महत्त्व रखते हैं।

सन् १९७२ से ले कर आज तक आपने अनेक अष्टोत्तरशत यज्ञ न केवल त्रिवेणी की भूमि पर अपितु मुम्बई नगरी में दो बार, इन्दौर में अनेक बार तथा डाकोर धाम में भी कर चुके हैं। रामनामसंकीर्तन आपका मुख्य अभियान है, जिसकी शाखायें बड़े-बड़े नगरों, कस्बों, गाँवों के अतिरिक्त इण्डोनेशिया एवं इटली तक में कार्यरत हैं। 'कलियुग केवल नाम अधारा' के आधार पर आप जनसाधारण को भगवन्नाम से जोड़कर उन्हें भवसागर से पार होने की प्रेरणा दे रहे हैं।

भारतीय सन्त-समाज ने आपकी भगवद्भक्ति, कर्त्तव्यपरायणता, उदात्त भावनाओं को देख कर सन् १९९८ में आपको डाकोर स्थित ब्रह्मपीठ पर आसीन कर, 'ब्रह्मपीठाधीश्वर' की उपाधि एवं उज्जैन कुम्भ २००४ में सारे सन्त समाज ने 'खोजी द्वाराचार्य' की उपाधि से विभूषित किया। ब्रह्मपीठस्थित लक्ष्मी नृसिंह मन्दिर में आमूल-चूल परिवर्तन कर आपने उसको भव्य, नव्य एवं दिव्य बना दिया, जिससे आपकी ख्याति और भी बढ़ गयी। त्रिवेणी ही की भाँति आपने डाकोर में भी रामचरितमानसभवन बनावाया, जो संगमरमर के पत्थर से बड़ा ही आकर्षक है।। यहाँ काँचजड़ित निजमन्दिर एवं जगमोहन भी दर्शनीय हैं।